14

उत्तररामचरित-चित्र दर्शन-1

इस पाठ में चित्र दर्शन को आरम्भ करते हैं। श्रीराम लक्ष्मण के साथ चित्र को लेकर सीता के पास गये। वहाँ जाकर राम सीता के संतोष के लिए लोकापवाद विषय में निन्दा करते हैं। उसके बाद वे चित्र को देखना प्रारम्भ करते हैं। ताड़का राक्षसी के निधन वृतान्त से वे चित्र अंकित हैं। वे चित्रवृत्त को क्रम से देखते हैं। चित्र के विषय में अपने मत को प्रकाशित करते हैं। वहाँ मिथिलावृतान्त, उनके विवाह, विवाह के बाद अयोध्या आगमन, उनका तत्कालीन जीवन चित्र के माध्यम से सम्यक् प्रकाशित होता है। इस चित्र दर्शन के प्रसंग में कवि सीता के मुख से श्रीराम का और श्रीराम के मुख से सीता का वर्णन होता है। इस प्रकार चित्र दर्शन से कवि सम्पूर्ण रामायण को वृतान्त को स्मरण कराने की चेष्टा करता है। इस पाठ में हम उसके चित्र दर्शन के कुछ भाग पढ़ते हैं।

उद्देश्यः-

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- राम और सीता के शरीरिक सौन्दर्यादि को जान पाने में;
- चित्र दर्शन के माध्यम से सम्पूर्ण रामायण के घटनाक्रम को जान पाने में;
- छन्दों के लक्षण जान पाने में;
- श्लोकों के अन्वय और प्रतिपदार्थ को समझ पाने में और;
- दीर्घ पदों का विग्रह एवं समास को जान पाने में।

14.1 सम्पूर्ण मूलपाठ-

सीता- होदु अज्जौत्त होदु। एहि। पेक्खह्म दाव दे चरिदम्। (भवत्वार्यपुत्र भवतु। एहि। प्रेक्षामहे तावत्ते चरितम्।)

(इत्युत्थाय परिक्रामति)

लक्ष्मण- इदं तदालेख्यम्।

सीता- (निर्वर्ण्य) के एदे उवरिणिरन्तरदा उवत्थुवन्दि विअ अज्जउत्तम-(के एते उपरि निरन्तरस्थिता उपस्तुवन्तीवार्यपुत्रम्।)

लक्ष्मण- देवी! एतानि तानि सरहस्यानि जृम्भकास्त्राणि यानि भगवत: कृशश्वात्कौशिकमृषिमुसंक्रान्तानि। तेन ताटकावधे प्रसादीकृतान्यार्यस्य।

राम- वन्दस्व देवि, दिव्यास्त्राणि।

ब्रह्मादयो ब्रह्महिताय तप्त्वा पर: सहस्रं शरदां तपांसि।
एतान्यदर्शन्गुरव: पुराणा: स्वान्येव तेजांसि तपोमयानि॥15॥

सीता- णमो एदारणम्। (नम एतेभ्य:)

राम- सर्वथेदानीं त्वत्प्रसूतिमुपस्थास्यन्ति।

सीता- अणुगहीदाह्मि। (अनुगृहीतास्मि।)

लक्ष्मण- एष मिथिलावृत्तन्त:।

सीता- अम्महे, दलन्तणवणीलुप्पलसिणिद्धमसिणसोहमाणमसलेन देहसोहग्गेण विह्यअत्थिमिदताददीसन्तसोम्मसुन्दरसिरौ। अणादरखंडिदसङ्करसरासणो सिहण्डमुद्धमुहमुण्डलो अज्जउत्तो आलिहिदो। (अहो, दलन्नवनीलोत्पलश्यामलस्निग्ध मसृणशोभमानमसलेन देहसौभाग्येन विस्मयस्तिमिततातदृश्यमानसौम्यसुन्दर श्रीरनादरत्रुटितशंकरशरासन:शिखण्ड मुग्धमुखमण्डल आर्यपुत्र आलिखित:।)

लक्ष्मण- आर्ये! पश्य पश्य।

सम्बन्धिनो वसिष्ठादीनेष तातस्तवार्चति।
गौतमश्च शतानन्दो जनकानां पुरोहित:॥16॥

राम- सुश्लिष्टमेतत्।

जनकानां रघूणां च सम्बन्ध: कस्य न प्रिय:।
यत्र दाता ग्रहीता च स्वयं कुशिकनन्दन: ॥17॥

टिप्पणी

सीता- एदे क्खु तक्कालकिदगोदाणमङ्गला चत्तरो भादरो विआहादिक्खिदा तुझे। अह्यो। जाणामि तस्सि जेव्व काले वत्तामि। (एते खलु तत्कालकृतगोदानमङ्गलाश्चत्वारो भ्रातरो विवाहदीक्षिता यूयम्। अहो! जानामि तस्मिन्नेव काले वर्ते।)

राम- एवम्

समयः स वर्तत इवैष यत्र मां समनन्दयत्सुमुखि! गौतमार्पितः।
अयमागृहीतकमनीयकङ्कणस्तव मूर्तिमानिव महोत्सवः करः ॥18॥

लक्ष्मण- इयमार्या। इयमप्यार्या माण्डवी। इयमपि वधूः श्रुतकीर्तिः।

सीता- वच्छ, इयं वि अवरा का। (वत्स इयमप्यपरा का।)

लक्ष्मण- (सलज्जास्मितम्। अपवार्य) अये, ऊमिलां पृच्छत्यार्या। भवतु। अन्यतः सञ्चारयामि। (प्रकाशम्)। आर्ये! दृश्यतां द्रष्टव्यमेतत्। अयं च भगवान्भार्गवः।

सीता- (ससंभ्रमम्) कम्पितास्मि। (कम्पिदह्मि)

राम- ऋषे! नमस्ते।

लक्ष्मण- आर्ये! पश्य। अयमार्येण-------(इत्यर्धोक्ते।)

राम- (साक्षेपम्) अयि! बहुतरं द्रष्टव्यम्। अन्यतो दर्शय।

सीता- (सस्नेहबहुमानं निर्वर्ण्य।) सुटु सोहसि अज्जउत्त एदिणा विणअमाहप्पेण। (सुष्ठु शोभसे आर्यपुत्र! एतेन विनयमाहात्म्येन।)

लक्ष्मण- एते वयमयोध्यां प्राप्ताः।

राम- (साश्रुम्) स्मरामि।

जीवत्सु तातपादेषु नूतने दारसंग्रहे।
मातृभिश्चिन्त्यमानानां ते हि नो दिवसा गताः॥19॥

इयमपि तदा जानकी-

प्रतनुविरलैःप्रान्तोन्मीलन्मनोहरकुन्तलैर्दशनकुसुमैर्मुग्धालोकं शिशुर्दधती मुखम्।
ललिततलितैर्ज्योत्स्नाप्रायैरकृत्रिमविभ्रमैरकृत मधुरैरङ्गानां मे कुतूहलमङ्गकैः॥20॥

लक्ष्मण- एषा मन्थरा।

रामः (सत्वरमन्यतो दर्शयन्) देवि वैदेहि।

इङ्गुदीपादपः सोऽयं शृङ्गवेरपुरे पुरा।
निषादपतिना यत्र स्निग्धेनासीत-समागमः॥21॥

लक्ष्मण- (विहस्य, स्वगतम्) अये मध्यमाम्बावृत्तमन्तरितमार्येण।

टिप्पणी

14.2 मूलपाठ

सीता- होदु अज्जौत्त होदु। एहि। पेक्खह्म दाव दे चरिदम्। (भवत्वार्यपुत्र भवतु। एहि। प्रेक्षामहे तावत्ते चरितम्।)

(इत्युत्थाय परिक्रामति)

लक्ष्मण- इदं तदालेख्यम्।

सीता- (निर्वर्ण्य) के एदे उवरिणिरन्तरदा उवत्थुवन्दि विअ अज्जउत्तम-(के एते उपरि निरन्तरस्थिता उपस्तुवन्तीवार्यपुत्रम्।)

लक्ष्मण- देवी! एतानि तानि सरहस्यानि जृम्भकास्त्राणि यानि भगवत: कृशश्वात्कौशिकमृषिमुसंक्रान्तानि। तेन ताटकवधे प्रसादीकृतान्यार्यस्य।

राम- वन्दस्व देवि, दिव्यास्त्राणि।

ब्रह्मादयो ब्रह्महिताय तप्त्वापरः सहस्रं शरदां तपांसि।
एतान्यपश्यन्गुरवः पुराणाः स्वान्येव तेजांसि तपोमयानि॥15॥

सीता- णमो एदारणम्। (नम एतेभ्य:)

राम- सर्वथेदानीं त्वत्प्रसूतिमुपस्थास्यन्ति।

सीता- अणुगहीदाह्मि। (अनगुहीतास्मि।)

अन्वयः-

सीता- आर्यपुत्र भवतु भवतु। एहि। ते तावत-चरितं प्रेक्षामहे।

(इति उत्थाय परिक्रामति)

लक्ष्मण- इदं तद-आलेख्यम्।

सीता- (निर्वर्ण्य) के एते उपरि निरन्तरस्थिता आर्यपुत्रम-उपस्तुवन्ति इव।

लक्ष्मण देवि! एतानि तानि सरहस्यानि जृम्भकास्त्राणि यानि भगवत: कृशाश्वत-कौशिकम-ऋषिम-उपसङ्क्रान्तानि। तेन ताटकावधे आर्यस्य प्रसादीकृतानि।

राम- देवि, दिव्यास्त्राणि वन्दस्व।

ब्रह्मादयो पुराणाः गुरवः ब्रह्महिताय शरदां परःसहस्रं तपांसि
तप्त्वा एतानि स्वानि तपोमयनि तेजांसि एव अपश्यन्॥15॥

टिप्पणी

सीता- एतेभ्यः नमः।

राम- सर्वथा इदानीं त्वत्प्रसूतिम-उपस्थास्यन्ति।

सीता- अनुगृहीता अस्मि।

अन्वयार्थः-

सीता- आर्यपुत्र, भवतु भवतु- आर्यपुत्र होने दो, अर्थात् मेरे विषय में प्रवाद की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, एहि- आओ, ते- तुम्हारे, तावत्- तो, चरितम्- चरित्र को, प्रक्षामहे - देखें। (इति उत्थाय परिक्रमति- इस प्रकार उठकर परिक्रमा करते हैं।)

लक्ष्मण- इदम्- यह, तद - वह, आलेख्यम् - चित्र है।

सीता- (विर्वर्ग्य- देखकर) के एते - ये कौन है, उपरि = उपर, निरन्तरस्थिता, लगातार खड़े हुए, आर्यपुत्रम् = राम को, उपस्तुवन्ति स्तुति कर रहे हैं।

लक्ष्मण- देवि - माता सीते! एतानि - ये, तानि - वे, सरहस्यानि -गुह्य जृम्भकास्त्र विशेषशक्ति सम्पन्न दिव्यास्त्र है, यानि - जो, भगवत् देव, कृशाश्वात् - कृशाश्व से ऋषि से, कौशिकम् ऋषिम्- कुशल ऋषि के पुत्र विश्वामित्र ऋषि के, उपसङ्कान्तानि - पास आये थे। तेन - उन्होंने, ताटकावधे - ताडकावध के अवसर पर, आर्यस्य, अनुकम्पी अग्रज राम के लिए, प्रसादीकृतानि - आशीर्वाद रूप में प्रदान किये थे।

राम- देवि- प्रिया सीता, दिव्यास्त्राणि- जृम्भकास्त्रों की, वन्दस्व- वन्दना करो। ब्रह्मादय-ब्रह्मा आदि है, जिनके वे प्रजापति आदि, पुराणाः- प्राचीन गुरुवः- आचार्य, ब्रह्महिताय- वेदों की रक्षा के लिए, शरदाम्- वर्षो की, परः सहस्र - हजारो से अधिक, तपांसि- तपस्या का, तप्त्वा- तप करके, एतानि- ये, स्वानि - अपने, तपोमयानि- तपस्या से उद्भूत, तेजॉसि- तेजरुप में, एवं- ही, अपश्यन् - प्रकट हुए, या दिखाई दिये।

सीता- एतेभ्यः नमः - इन को नमस्कार करती हूँ।

राम- सर्वधाः- सभी प्रकार से, इदानीम्- इस समय, त्वत्प्रसूतिम्- तुम्हारी सन्तान को, उपस्थिास्यन्ति - प्राप्त हों।

सीता- अनुष्टहीता, अस्मि - अनुगृहीत या कृतार्थ हो गई हूँ।

व्याख्या- राम के प्रशंसा वचनों को सुनकर आनन्दित सीता राम के साथ चित्र को देखना प्रारम्भ करती हैं। एकचित्र के ऊपरी भाग में कुछ लोग निरन्तर खड़े कुछ लोग भगवान श्रीराम की स्तुति करते है, यह देखते है। उसके बाद वह जब इस विषय में लक्ष्मण से पूछती है तब लक्ष्मण उत्तर देता है कि ये मन्त्रयुक्त जृम्भक नाम के अस्त्र हैं, भगवान-कृशाश्व ने ऋषि कौशिक को ये अस्त्र प्रदान किये। ताड़का वध के अवसर पर भगवान राम से प्रसन्न होकर विश्वामित्र ने ये अस्त्र राम के लिए अनुग्रहपूर्वक प्रदान किये।

लक्ष्मण के कहने के बाद सीता के प्रति उन दिव्य अस्त्रों की वन्दना के लिए कहा। भगवान श्रीराम दिव्यास्त्रों के स्वरूप का वर्णन करते हैं कि पुरातन काल में दानवादि अखिल धर्म मूल भूत वेदों के विनाश करने के लिए उद्यत थे। अतः उनके निवारण के लिए जगत्सृष्टा प्रजापति आदि प्राचीन आर्यो ने कठोर तपस्या करना आरम्भ किया। हजारों वर्षो को व्याप्त करके भी तपस्या करते रहे। उसके बाद उन्होंने अपने तेज से उत्पन्न दिव्यास्त्रों को देखा।

राम के वचन से उन जृम्भकास्त्रों के दिव्यत्व को जानकर देवी सीता दिव्यास्त्रों को प्रणाम करती हैं। राम सीता को कहते हैं कि जैसे उन्होंने इनको प्राप्त किया था। वैसे ही उनकी सन्तान भी इन दिव्यास्त्रों को प्राप्त करेंगी। सीता राम को कहती है कि वह उनके वचन से कृतार्थ हुई।

व्याकरण विमर्शः-

- **निर्वर्ण्य** -निर्-पूर्वकात-वर्ण-धातोः ल्यपि निर्वर्ण्य इति रूपम्।
- **उपस्तुवन्ति** - उपपूर्वकात-स्तुधातोः लटि प्रथमपुरुषचबहुवचने उपस्तुवन्ति इति रूपम्।
- **प्रसादीकृतानि**- अप्रसादानि प्रसादानि कृतानि इत्यर्थे च्विप्रत्यये कृधातोः अनुप्रयोग क्तप्रत्यये नपुंसके प्रथमाबहुवचने प्रसादीकृतानि इति रूपम्।
- **दिव्यास्त्राणि** -दिव्यानि च तानि अस्त्राणि दिव्यास्त्राणि इति कर्मधारयसमासः।
- उपसङ्क्रान्तानि -उपपूर्वकात-सम्पूर्वकात-क्रम्धातोः क्तप्रत्यये नपुंसके प्रथमाबहुवचने उपसङ्क्रान्तानि इति रूपम्।
- **ब्रह्मादयः** - ब्रह्म आदिर्येषां ते ब्रह्मादयः इति बहुव्रीहिसमासः।
- **तप्त्वा** -सन्तापार्थकात-तप्-धातोः क्त्वाप्रत्यये तप्त्वा इति रूपम्।

छन्दः- ''ब्रह्मादयः- श्लोक में इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के समावेश से उपजाति छन्द है उसका लक्षण है- अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ते।

अलंकार विमर्शः-

1. **ब्रह्मादयः** श्लोक में शस्त्रदर्शन से महापुरुषों का भी कीर्तन होने के कारण उदात्त अलंकार है, उसका लक्षण है।

   लोकतिशयसम्पत्ति वर्णनोदात्तमुच्यते।
   यद्वापि प्रस्तुतस्यांग महतां चरित भवेत्॥

2. इस श्लोक में अद्भूत शास्त्रों का वर्णन होने से भाविकालंकार है। उसका लक्षण है- अद्भुतस्य पदार्थस्य भूतस्याथ भविष्यतः। यत्प्रतयक्षायमाणत्वं तद्भाविक मुदाद्हृतम्॥
3. **स्वान्येव तेजांसि** - में रूपक अलंकार है।
4. यहां तीन अलंकारों का अंगागिभाव होने से संकरालंकार है।

पाठगत प्रश्न 14.1

टिप्पणी

1. विश्वामित्र ने दिव्यास्त्र किससे प्राप्त किये।?
2. रामचन्द्र ने कब किससे दिव्यास्त्र प्राप्त किये?
3. ब्रह्मादि ने किसलिए तप किया?
4. उन्होंने कैसे दिव्यास्त्रों को देखा?
5. ब्रह्मादि ने कितने काल तक तप किया?
6. उपजाति छन्द का लक्षण क्या है?
7. 'प्रसादीकृतानि' रुप सिद्ध कीजिए?

14.3 मूलपाठ

लक्ष्मण- एष मिथिलावृत्तन्तः।

सीता- अम्महे, दलन्तणवणीलुप्पलसिणिद्धमसिणसोहमाणमसलेन देहसोहग्गेण विह्यअत्थिमिदताददीसन्तसोम्मसुन्दरसिरौ। अणादरखंडिदसङ्करसरासणो सिहण्डमुद्धमुहमुण्डलो अज्जउत्तो आलिहिदो। (अहो, दलन्नवनीलोत्पलश्यामलस्निग्ध मसृणशोभमानमसलेन देहसौभाग्येन विस्मयस्तिमिततातदृश्यमानसौम्यसुन्दर श्रीरनादरत्रुटितशंकरशरासनः शिखण्ड मुग्धमुखमण्डल आर्यपु= आलिखितः।)

लक्ष्मण- आर्ये! पश्य पश्य।

सम्बन्धिनो वसिष्ठादीनेष तातस्तवार्चति।
गौतमश्च शतानन्दो जनकानां पुरोहितः॥16॥

राम- सुश्लिष्टमेतत्।

जनकानां रघूणां च सम्बन्धः कस्य न प्रियः।
यत्र दाता ग्रहीता च स्वयं कुशिकनन्दनः ॥17॥

अन्वय-

लक्ष्मण- एष मिथिलावृत्तन्तः।

सीता- अहो, दलन्नवनीलोत्पलश्यामलस्निग्धमसृणशोभमानमांसलेन देहसौभाग्येन विस्मयस्तिमिततातदृश्यमानसौम्यसुन्दरश्री अनादरत्रुटितशङ्करशरासनः शिखण्डमुग्ध मुखमण्डलः **आर्यपुत्रः** आलिखित।

लक्ष्मण- आर्ये! पश्य पश्य।

एष तव तातः सम्बन्धिनः वसिष्ठादीन-अर्चति (तथा)। जनकानां पुरोहितः गौतमः शतानन्दः (सम्बन्धितः वसिष्ठादीन-अर्चति)।।16।।

राम- सुश्लिष्टम-एतत्।

जनकानां रघूणां च सम्बन्धः च सम्बन्धः कस्य न प्रियः। यत्र स्वयं कुशिकनन्दनः दाता ग्रहीता च।।17।।

अन्वयार्थ-

लक्ष्मण- एषः - यह, मिथिलावृतान्तः - मिथिला नगर का वृतान्त है।

सीता- अहो! - आश्चर्य से, दलन्नवनी लोत्पलश्यामलस्निग्धमसृणशोभमानमसलेन - विकसित नूतन कमल के सामन श्यामल, स्निग्ध मसृण (चिकने) और मसल (गठे हुए), देह, सौभाग्येन • शरीर की सुन्दरता के कारण, विस्मयस्मिमिततातदृश्यमान सौम्यसुन्दरश्रीः - जिनकी परम मनोहर शोभा को पिताजी विस्मय से टकटकी लगाकर देख रहे हैं, अनादरत्रुटितशंकरशरासनः • अवहेलना से जिन्होंने शिव के धनुष को तोड़ डाला है, शिखण्डमुग्धमुखमण्डलः - ऐसे काक पक्षों या प्रसाधित केशों से रमणीय तथा भोले-भाले मुख वाले, आर्यपुत्रः - आर्यपुत्र राम ही, अलिखितः- चित्रित किये गये है।

लक्ष्मण- आर्ये पश्य पश्य -आर्ये देखिए, देखिए। एषः -यह, तव - तुम्हारे, भवत्याः- सीता के, तातः- पिता जनक और, जनकानां पुरोहितः- राजा जनक के पुरोहित, गौतम शतानन्दः- गौतम शतानन्द के साथ, संबंधिनः- वरपणीय वसिष्ठ आदि सम्बन्धियों की, अर्चति- अर्चना कर रहे है।

राम- सुश्लिष्टम् एतत्- यह सर्वांग सुन्दर है, जनकानाम्- जनकवंश में उद्भवों का, रघूणाम्- रघुवंश में उद्भव राजाओं का, च संबंधः- और संबंधः, कस्य न प्रियः- किस पुरुष को अभिप्रेत नहीं है। अपितु सभी को अच्छा लगता है यह भाव है। यत्र- जिसमें, वैवाहिक- विवाह में, स्वयं कुशिकानन्दनः- विश्वामित्र, दाता - दानकर्ता, च- और, ग्रहीता- ग्रहण करने वाले हैं।

व्याख्या-

तदनंतर लक्ष्मण उस चित्र में मिथिला नगर का वृत्तान्त दिखाना शुरु करते है। उस चित्र में अंकित राम के सौन्दर्य को देखकर सीता प्रसन्न हुई। विकसित नवीन कमल के समान श्यामल, स्निग्ध व मांसल शरीर वाले श्रीराम का वर्णन करती हैं। उस सौन्दर्य को देखने पर निश्चल होकर पिता जनक सविस्मय उसकी कान्ति को देखते रहते हैं। श्रीराम ने अनायास ही शिव धनुष का खण्डन किया। शिखण्ड के समान श्रीराम का मुख अत्यधिक सुन्दर दिखाई देता है।

उसके बाद लक्ष्मण राम और सीता के विवाह कालीन चित्र को देखते हैं। विवाह से पूर्व वरपक्ष वाले वसिष्ठादि मिथिला नगर में राजा जनक के घर गये। उस चित्र में सीता के पिता महाराज

टिप्पणी

जनक उनके वंश के कुलपुरोहित गौतम शतानन्द वसिष्ठादि का सत्कार करते हैं। इससे विवाहकालीन घटनाक्रम दोनों की स्मृति में आ गया।

यहां सीता और राम के विवाह के महत्व को स्वयं श्रीराम वर्णन करते है। इस विवाह में कन्यारुप में जनक वंशजा सीता है और वर रुप में रघुवंशीय पुरुषोत्तम श्रीराम है। दोनों ही वंश पूज्य है। दोनों के विवाह से दोनों वंशो के मध्य संबंध हो गया। अत: इस विवाह का बहुत महत्त्व है। यहां कन्यादान कर्ता और कन्याग्रहण कर्ता अकेले कुशिक मुनिपुत्र स्वयं कौशिक है। इस प्रकार विवाह के महत्व के वर्णन से उनसे उत्पन्न पुत्र भी सर्वगुणसम्पन्न होगा। यह भाव है।

व्याकरण विमर्श:-

मांसलम्-मांसम-अस्यास्तीति विग्रहे मांसशब्दात-लच्प्रत्यये मांसलशब्दो निष्पन्न:।

देहसौभाग्येन-सुभगस्य भाव: इति विग्रहे सुभगशब्दात-ष्यञ्प्रत्यये सौभाग्यम-इति निष्पद्यते। देहस्य सौभाग्यम-देहसौभाग्यमिति षष्ठीतत्पुरुषसमास:, तने।

अनादरखण्डितशङ्करशरासन:- अनादरेण खण्डितम-अनादरखण्डितमिति तृतीयातत्पुरुषसमास:। शङ्करस्य शरसनं शङ्करशरासनमिति षष्ठीतत्पुरुषसमास:। अनादरखण्डितं शङ्करशरासनं येन स: अनादरखण्डितशङ्करशरासन: इति बहुव्रीहिसमास:।

शिखण्डमुग्धमुखमण्डल:- शिखण्डेन मुग्धं शिखण्डमुग्धमिति तृतीयातत्पुरुषसमास:। शिखण्डमुग्ध यस्य स शिखण्डमुग्धमुखमण्डल: इति बहुव्रीहिसमास:।

वसिष्ठादीन्-वसिष्ठ आदिर्येषां ते वसिष्ठादय: इति, तान-इति तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहि:

गौतम:-गोतमस्यापत्यं पुमान-इत्यर्थे गोतमशब्दाद-अणप्रत्यये गौतम: इति निष्पन्नम्।

पुरोहित:- पुरो धीयते इत्यर्थे पुरस-इत्युपपदे धाधातो: क्तप्रत्यये पुरोहितशब्दो निष्पन्न:।

ग्रहीता-ग्रह्-धातो: कर्तरि तृच्प्रत्यये निष्पन्नाद-ग्रहीतृशब्दात-पुंसि प्रथमैकवचने सौ ग्रहीता इति रूपम्।

छन्द:-संबंधित एवं जनकानाम-इन दोनों श्लोकों में अनुष्टुप छन्द है।

अलंकार विमर्श:-

जनकानामिति - श्लोक में कस्य न प्रिय: कथन से अर्थापत्ति अलंकार है।

पाठगत प्रश्न 14.2

8. आर्यपुत्र कैसे अंकित है?

9. अनादरखण्डितशंक शरासन:- से समास लिखिए।

10. सीता के पिता किनकी अर्चना करते हैं?

11. जनक का पुरोहित कौन है?

12. जनक के साथ कौन वसिष्ठादि की अर्चना करता है?

13. किस-किस का संबंध सभी को प्रिय है?

14. संबंध में दाता और ग्रहीता कौन थे?

14.4 मूलपाठ

सीता- एदे क्खु तक्कालकिदगोदाणमङ्गला चत्तरो भादरो विआहादिक्खिदा तुझे। अह्यो। जाणामि तस्सि जेव्व काले वत्तामि। (एते खलु तत्कालकृतगोदानमङ्गलाश्चत्वारो भ्रातरो विवाहदीक्षिता यूयम्। अहो! जानामि तस्मिन्नेव काले वर्ते।)

राम- एवम्

समयः स वर्तत इवैष यत्र मां समनन्दयत्सुमुखि! गौतमार्पितः।
अयमागृहीतकमनीयकङ्कणस्तव मूर्तिमानिव महोत्सवः करः ॥18॥

लक्ष्मण- इयमार्या। इयमप्यार्या माण्डवी। इयमपि वधूः श्रुतकीर्तिः।

सीता- वच्छ, इयं वि अवरा का। (वत्स इयमप्यपरा का।)

लक्ष्मण- (सलज्जास्मितम्। अपवार्य) अये, ऊमिलां पृच्छत्यार्या। भवतु। अन्यतः सञ्चारयामि। (प्रकाशम्)। आर्ये! दृश्यतां द्रष्टव्यमेतत्। अयं च भगवान्भार्गवः।

सीता- (ससंभ्रमम्) कम्पितास्मि। (कम्पिदह्मि)

राम- ऋषे! नमस्ते।

लक्ष्मण- आर्ये! पश्च। अयमार्येण-------(इत्यर्धोक्ते।)

राम- (साक्षेपम्) अयि! बहुतरं द्रष्टव्यम्। अन्यतो दर्शय।

सीता- (सस्नेहबहुमानं निर्वर्ण्य।) सुटु सोहसि अज्जउत्त एदिणा विणअमाहप्पेण। (सुहु शोभसे आर्यपुत्र! एतेन विनयमाहात्म्येन।)

अन्वय-

सीता- एते खुल तत्कालकृतगोदानमङ्गलाः यूयं चत्वारो भ्रातरो विवाहदीक्षिताः। अहो! जानामि तस्मिन-एव प्रदेशे तस्मिन-एव काले वर्ते।

राम- एवम्, हे सुमुखि, एष स समयः वर्तते इव, यत्र गौतमार्पितः आगृहीतकमनीयकङ्गणः अयं तव करः मूर्तिमान-महोत्सवः इव मां समनन्दयत्।।18।।

लक्ष्मण- इयम-आर्या। इयम-अपि आर्या माण्डवी। इयम-अपि वधूः श्रुतकीर्तिः।

सीता- वत्स, इयम-अपि अपरा का।

लक्ष्मण- (सलज्जास्मितम्। अपवार्य) अये, आर्या ऊर्मिलां पृच्छति। भवतु। अन्यतः सञ्चारयमि। (प्रकाशम्)। आर्ये! दृश्यतां द्रष्टव्यम-एतत्। अयं च भगवान-भार्गवः।

सीता- (ससंभ्रमम्) कम्पिता अस्मि।

राम- ऋषे! नमस्ते।

लक्ष्मण- आर्ये! पश्य। अयम-आर्येण----- (इत्यार्धोक्ते।)

राम- (साक्षेपम्) अयि! बहुतरं द्रष्टव्यम्। अन्यतो दर्शय।

सीता- (सस्नेहबहुमानं निर्वर्ण्य।) आर्यपुत्र, एतेन विनयमाहात्म्येन सुष्ठु शोभसे।

अन्वयार्थ-

सीता- एते - ये, खलु - निश्चय ही, तत्काल कृत गोदानमंगलाः - तत्काल गोदान संस्कार (मुण्डन) कराये हुए, यूयं चत्वारः भ्रातरः - तुम चारो भाई हो। विवाहदीक्षिता - विवाह के लिए दीक्षित, अहो - आश्चर्य, जानामि- चिन्तन कर रही हूँ या लग रहा है। तस्मिन्नव प्रदेशे - उसी प्रदेश या स्थान में, तस्मिन्नेव काले - उसी समय (विवाह के समय पर) मैं ही हूँ।

राम- एवम्- इसी प्रकार जैसेः- हे सुमुखि -सुन्दर मुख वाली, एषः -यह, सः- वह ही, **समयः** - काल के समान है। यत्र- जहां, गौतमर्पितः-गौतम द्वारा अर्पित, आगृहीत - कमनीय, कंकणः- कामनीय कंकण से अलंकृत, अयंम्- यह, तव- तुम्हारा, करः - हाथ, मूर्तिमान्- मूर्ति वाला, महोत्सव, इव माम् - महोत्सव के समान मुझे, समनन्दत् - आनन्दित किया था।

लक्ष्मण- इयम् - यह, आर्या - आप सीता है। इयम् - यह, अपि आर्यामण्डवी - भी आर्या भरत पत्नी माण्डवी है। इयम् - यह, अपि श्रुतकीर्ति - यह शत्रुध्नपत्नी श्रुतकीर्ति है।

सीता- वत्स, इयम् - यह, अपरा अन्या का - यह दूसरी कौन है।

लक्ष्मण- (सलज्जास्मितं - लज्जा के साथ हंसता हुआ, अपवार्य - दूसरी ओर स्वयं का ही) अये - अरे, ऊर्मिलाम् - उर्मिला को मेरी पत्नी को, पृच्छति - पूछती है, आर्या - सीता। भवतु - होवे, (अन्य वृतान्त दिखाकर) अन्यतः - दूसरी, ओर संचारयामि - ध्यान आकृष्ट करता हूँ। (प्रकाशम् - प्रकट में) आर्ये - हे कल्याणी, दृश्याताम् - देखने चाहिए, द्रष्ट्व्यम्- दर्शनीय, एतत्- यह। अयम्- यह, च भगवान् भार्गवः - भृगुपुत्र परशुराम है।

सीता- (ससम्भ्रमम् - भय के साथ) कम्पिता अस्मि - मैं तो भय से कांप उठी हूँ।

राम- एषे: नमस्ते -मुनि को नमस्कार करते है।

लक्ष्मण- आर्ये - सीते, पश्य= देखो, अयम् - यह, परशुराम आर्येण - रामचन्द्र ने .... (इत्यर्धोक्ते - वाक्य के पूर्ण होने से पहले ही)

राम- (सापेक्षम् - निषेध करते हुए) आथि - अरे भाई, बहुतरं द्रष्टव्यम् - बहुत कुछ देखना है। अन्यत: दर्शय - अन्य अर्थात् दूसरा दिखलाओ।

सीता- (सस्नेहबहुमानम् - सस्नेह सम्मान पूर्वक, निर्वर्ण्य - देखकर) आर्यपु= - आप श्रीराम, एतेन विनय माहात्म्येन,- इन विनय की महत्ता से, सुष्ठु शोभ से - बहुत शोभित होते हैं।

व्याख्या-

उसके बाद सीता विवाह संस्कार से मुण्डन केशदान संस्कार को करते हुए चारों सहोदर भ्राता राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न को देखती है। सीता को अनुभव हुआ कि वह उस विवाह काल में इस समय है। इस प्रकार से चित्रकार की निपुणता जान सकते हैं।

उसके बाद में राम बोलते हैं कि उस चित्र में उनके विवाह कालीन वह स्थिति चित्रित है। जहाँ सीता के हाथ श्रीराम के हाथ के ऊपर स्थापित किए गये। उसका श्रीराम वर्णन करते है कि सीता का हाथ सुन्दर कंकन से सुशोभित था। जब पुरोहित शतानन्द ने सीता का हाथ राम के ऊपर स्थापित किया तब सीता को कोमल हाथ श्रीराम को अतीत आनन्दित कर रहा था। राम सीता हस्त को महोत्सव रुप में वर्णन करते हैं। जैसे महोत्सव काल में महान आनन्द होता है उसकी प्रकार सीता हस्त के स्पर्श से राम के हृदय में आनन्द की तरंग उत्पन्न हुई।

उसके बाद लक्ष्मण क्रमश: राम पत्नी सीता, भरत पत्नी माण्डवी, शत्रुघ्न पत्नी श्रुतकीर्ति और स्वयं की पत्नी उर्मिला को देखा और सीता को दिखाते हैं। तदनन्तर लक्ष्मण ने अन्य एक चित्र को देखा जहां भगवान श्रीपरशुराम चित्रित थे। उसको देखकर देवी सीता कांपने लगी। उसके बाद श्रीराम परशुराम को प्रणाम करते हैं।

तब लक्ष्मण राम से परशुराम पराजित हुए, यह कहने को प्रवृत होते हैं तब ही श्रीराम उसको उस वर्णन को छोड़कर दूसरा चित्र प्रदर्शन के लिए कहते हैं। तब राम के विनय को देखकर सीता राम के विनयाधिक्य से प्रकाशित सौन्दर्य का वर्णन करती हैं।

व्याकरण विमर्श-

समनन्दयत्- समुपसर्गपुर्वकात-नन्द्धातो: णिचि लङि प्रथमपुरुषैकवचने समनन्दयत-इति रूपम्।

सुमुखि -शोभनं मुखं यस्या: सा सुमुखी सम्बोधनैकवचने सुमुखि इति रूपम्।

आगृहीतकमनायकङ्गण: - आपूर्वकात-ग्रह्-धातो: क्तप्रत्यये आगृहीत इति रूपम्। आगृहीतं कमनीयं कङ्कणं येन स: आगृहीतकमनीयकङ्कण।

टिप्पणी

महोत्सव- महान-च असौ उत्सवः महोत्सव इति कर्मधारयसमासः।

विनयमाहात्म्येन- विनयस्य माहात्म्यं विनयमाहात्म्यम्, तेनेति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

छन्द- 'समयः स' इस श्लोक में मंजुभाषिणीच्छन्द है। उसका लक्षण छन्दोमंजरी में - ''सहसा जगौ भवति मंजुभाषिणी'' है।

अलंकार विमर्शः-

'समयः स' श्लोक में 'वर्तते इव' से क्रियोत्प्रेक्षा अलंकार मूर्तिमान महोत्सव इव से गुणोत्प्रेक्षा तथा 'भूतस्य वृतान्तस्य प्रस्तावाच्य' से भाविकालंकार है।

पाठगत प्रश्न 14.3

15. रामादि भाई चित्र में कैसे थे?
16. उसी काल में - इस में कौन से काल की बात है?
17. सीता का हाथ किसने राम के हाथ में अर्पित किया?
18. सीता का हाथ कैसा था?
19. सीता के हाथ ने राम को किसके समान आनन्दित किया?
20. मञ्जुभाषिणी छन्द का लक्षण लिखिए।
21. राम किस माहात्म्य से सुशोभित है?

14.5 मूलपाठ

लक्ष्मण- एते वयमयोध्यां प्राप्ताः।

राम- (साश्रुम्) स्मरामि।

जीवत्सु तातपादेषु नूतने दारसंग्रहे।
भातृभिश्चिन्त्यमानानां ते हि नो दिवसा गताः॥19॥

इयमपि तदा जानकी-

पतनविरलैः प्रान्तोन्मीलन्मनोहरकुन्तलै र्दशनकुसुमैर्मुग्धालोकं शिशुर्दधती मुखम्।
ललिततलितैर्ज्योत्स्नाप्रायैरकृत्रिमविभ्रमैरकृत मधुरैरङ्गानां मे कुतूहलमङ्गकैः॥20॥

लक्ष्मण - एषा मन्थरा।

टिप्पणी

राम- (सत्वरमन्यतो दर्शयन्) देवि वैदेहि।

इङ्गुदीपादपः सोऽयं शृङ्गवेरपुरे पुरा।
निषादपतिना यत्र स्निग्धेनासीत-समागमः॥21॥

लक्ष्मण- (विहस्य, स्वगतम्) अये मध्यमाम्बावृत्तमन्तरितमार्येण।

अन्वय-

लक्ष्मण - एते वयम् अयोध्यां प्राप्ताः।

राम - (सास्रम्) स्मरामि, हन्त स्मरामि।

तातापदेषु जीवत्सु दारसंग्रहे नूतने मातृभिः चिन्त्यमानानां नः ते हि दिवसा गताः॥19॥

इयमपि तदा जानकी-

प्रतनुविरलै प्रान्तोन्मीलन्मनोहरकुन्तलैः दशनकुसुमैः मुग्धालोंक मुखं दधती शिशुः ललितललितैः ज्योत्स्नाप्रायैः अकृत्रिमविभ्रमैः मधुरैः अङ्गकैः मे अम्बानां च कुतूहलम-अकृत॥20॥

लक्ष्मण - एषा मन्थरा।

राम - (सत्वरमन्यतो दर्शयन्) देवि वैदेहि।

श्रृङ्गवेरपुरे अयं स इङ्गुदीपादपः यत्र पुरा स्निग्धेन निषादपतिना समागमः आसीत्॥21॥

लक्ष्मण- (विहस्य, स्वगतम्) अये आर्येण मध्यमाम्बावृत्तम-अन्तरितम्।

अन्वयार्थ-

लक्ष्मण- एते वयम् अयोध्या प्राप्ता - (लीजिए) अब हम लोग अयोध्या में आ गये है।

राम- (सास्रम्- आंसुओं के साथ) स्मरामि- स्मरण करता हूँ। हन्त!- खेद है। स्मरामि - स्मरण करता हूँ। तात पादेषु - पिता के चरणों में, जीवत्सु - प्राण को धारण करते हुए में, दारसंग्रहे - विवाह में, नूतने - नवीन में, मातृभिः - माताओं द्वारा, चिन्त्यमानानाम् - लालन करती हुई माताओं का, नः - हमारा, ते - वे पूर्व के अनुभव, हि - निश्चय - से, दिवसा गताः - दिन व्यतीत हो गये।

इयम् - यह, अपि तदा - भी, उस समय (तब) विवाह बाद, जानकी - देवी सीता।

प्रतनुविरलैः- छोटे-छोटे और छिदे छिदे कुसुम कलिकाओं से, प्रान्तोन्मीलन् महोहरकुन्तलैः- औष्ठप्रान्त में उन्मील मनोहर, केशों से, दशनकुसुमैः- कुसुम तुल्य दन्तावली से, मुग्धालोकम्- दर्शनीय, मुखम्- आनन, दधती- धरण करती

टिप्पणी

हुई, शिशु- बालिका यह जानकी सीता भी, ललितललितैः- मनोहर से भी मनोहर, ज्योत्स्नाप्रायैः- कौमुदी के तुल्य से, अकृत्रिमविभ्रमैः- स्वभाविक विलासों से, मधुरैः - प्रिय, अंगकैः - अवयवों से, मे अम्बानाम् - मेरी माताएँ कौशल्या कैकेयी सुमित्रा आदि को, कुतुहुलम् - कौतुकम्, अकृत - करती थी।

लक्ष्मण - एषा मन्थरा - यह मन्थरा के वृत्तान्त का चित्र है।

रामः- (सत्वरम् - शीघ्र, अन्यतो, मन्थरावृत्तान्त सूचक स्थल से अन्यत्र, दर्शयन् - देखते हुए), **देवि**- प्रिये, वैदेहि- सीता। शृंगवेरपुरे -शृंगवेरपुर नामक स्थान पर, अयम् - यह, सः - वह पहले देखे, इंगुदीपादपः - (हिंगोट) तापसवृक्ष है, यत्र - जहाँ वनगमन काल, में पुरा - पूर्व में, स्निग्धेन - स्नेहयुक्त या परमभक्त से निषादपतिना - निषाधराज गुह से, समागमः - साक्षात्कार, आसीत् - हुआ था।

लक्ष्मणः- (विहस्य - हंसी के साथ, स्वगतम् - अपने मन ही) अये - अहो, आर्येण - श्रीराम द्वारा, मध्यमाम्बावृत्तम् - बीच की माता - कैकेयी का चरित, अन्तरितम् - छोड़ दिया।

व्याख्याः-

आगे के चित्र में विवाह के बाद उनका अयोध्या नगर का चित्रण है। राम क्रन्दन के साथ कहते हैं कि वह सम्पूर्ण वृतान्त को स्मरण करते हैं।

यहां श्रीराम का विवाह के बाद उनका जीवन कैसे व्यतीत हुआ, इसका वर्णन करते हैं वह कहते हैं कि उस समय में उसके पिता के चरण जीवित थे। अतः राज्यादि के विषय में सभी चिन्तनादि पिता करते थे। उनकी माताएँ उनके सुखदुखादि विषय में निरन्तर चिन्तित रहती थीं माताओं और पिता में रहते हुए वे सर्वथा चिन्तामुक्त थे। उस समय उनके दिन सुख से व्यतीत हुए। यहाँ सुखमय दिनों के चित्र को देखकर राम स्मृति पथ पर आते हैं।

उसके बाद श्रीराम चित्र में चित्रित विवाह के बाद की सीता के शरीर सौन्दर्य का वर्णन करते हैं। सीता का मुख अतीव निपुणता से भगवान ने बनाया था। अतः वह विरल थी। उसके सुन्दर केश, मुख के ऊपर खिलते थे। उसके श्वेत दन्तपंक्ति पुष्पों के समान कोमल थे। इस प्रकार मनोहर मुख मण्डल को धारण करती हुए सीता के अंग अतिकोमल थे। जैसे ज्योत्स्ना लोगों के मन में आनन्द पैदा करती है। उसी प्रकार स्वाभाविकता से विलासयुक्त सीता के अंग भी राम के तथा उसकी माताओं के मन में कौतुहल पैदा करते थे। अतः वे बार-बार जानकी को देखने के लिए उत्सुक थे।

उसके बाद मन्थरावृत्तांत जब लक्ष्मण दिखाते हैं तब राम कैकेयी माता के अपवाद के विषय में आलोचना न चाहते हुए दूसरे चित्र को देखते हैं। जिसको देखकर वे सीता को कहते हैं कि यह वही तापसवृक्ष है जहाँ निषादराज ग्रह के साथ साक्षात्कार हुआ था।

व्याकरण विमर्शः-

जीवत्सु - जीव्-धातोः शतृप्रत्यये सप्तमीबहुवचने जीवत्सु इति रूपम्।

चिन्त्यमानानाम-- चिन्त्-धातोः कर्मणी शनचि षष्ठीबहुवचने चिन्त्यमानाम-इति रूपम्।

प्रान्तोन्मीलन्मनोहरकुन्तलैः - प्रान्तयोः उन्मीलन्तः प्रान्तोन्मीलन्तः इति सप्तमीतत्पुरुषः। मनोहराः **कुन्तलाः** मनोहरकुन्तलाः इति कर्मधारयसमासः।

दशनकुसुमैः - दशनाः कुसुमानीव तैः दशनकुसुमैः इति कर्मधारयसमासः।

मुग्धालोकम-- मुग्धः आलोकः यस्य तत-मुग्धालोकम-इति बहुव्रीहिसमासः।

अकृत्रिमविभ्रमैः - अकृत्रिमाः विलासाः येषां तैः अकृत्रिमविभ्रमैः इति बहुव्रीहिसमासः।

छन्दः-

1. जीवत्सु- इस श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।
2. **प्रतनुविरलैः**- इस श्लोक में हरिणी छन्द है जिस का लक्षण है।
   ''नसमरसला गः खड्वैदैर्हयैर्हरिणीमता''।

अलंकार विमर्शः-

1. जीवत्सु इस श्लोक में दिवसानां सुख प्रदत्वे सत्यपि, तातपादानां जीवितत्वे, पुन नवविवाह रूपस्य हेत्वन्तरस्य खले कपोपिकान्यायात-साहित्येन एकत्रावतारणात-समुच्ययालंकार।
2. प्रतनुविरलैः श्लोक में मुग्धनायिकावत-होने से असाधारण चेष्टाओं का वर्णन होने से स्वभावोक्ति अलंकार है। उसका लक्षण- ''स्वभावोक्तिर्दुरूहार्थस्वक्रियारूप वर्णनम्''
3. **ज्योत्स्नाप्रायैः**- से लुप्तोपमालंकार है।
4. स्वभावाक्ति का उपमा से अङ्गा-अङ्गीभावां के कारण संकरालंकार है।

पाठगत प्रश्न 14.4

22. श्रीराम के विवाह के बाद राज्यादि के विषय में कौन चिन्तन करता था?
23. रामादि के दिन कैसे गये?
24. सीता के केश कैसे थे?
25. सीता के दन्त कैसे थे?
26. सीता का मुख कैसा था?
27. सीता के अवयव कैसे थे?
28. कहाँ पर निषादराज के साथ राम का साक्षात्कार हुआ?

पाठसार

राम के प्रशंसा वचन सुनकर आनन्दित सीता राम के साथ चित्र को देखना आरम्भ करती हैं। सर्वप्रथम वे उस चित्र को देखती हैं। जहां ताड़कावध के समय सन्तुष्ट ऋषि विश्वामित्र ने कृशाश्व से प्राप्त किये दिव्याशास्त्रों को अनुकम्पा से राम को देते हैं। रामवचन से उनके जृम्भकास्त्रों की दिव्यता को जानकर देवी सीता उन दिव्य शस्त्रों को प्रणाम करती है। राम सीता को कहते हैं कि जैसे उन्होंने इन को प्राप्त किया वैसे ही उनकी सन्तान भी इन दिव्यास्त्रों को प्राप्त करेंगी। सीता राम को कहती हैं कि वह उसके वचन से कृतार्थ हुई।

उसके बाद लक्ष्मण मिथिलानगर के वृत्ततात्मक चित्र का प्रदर्शन करते हैं। वहाँ श्रीराम के चित्र देखकर सीता उसके देहादि-सौन्दर्य का वर्णन करती हैं। उसके बाद उन्होंने कैसे अनायास से शिव धनुष का खण्डन किया, यह कहती है। उसके बाद उनके विवाह कालीन चित्र आते हैं जहाँ विवाह से पूर्व चारों भाई राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न केशदान नामक मंगल कार्यरूप मुण्डन संस्कार कराते हैं। वहां एकत्र स्वयं जनक और उनके पुरोहित शतानन्द वसिष्ठादि वर पक्ष का सत्कार करते हैं। उसके बाद श्रीराम उनके विवाह के माहात्म्य का वर्णन करते हैं। वे कहते है कि जनक रघुवंशो के मध्य सम्बन्ध किस को अभीष्ट नहीं है। और इस विवाह में कन्या दाता और कन्या ग्राहक स्वयं विश्वामित्र है। पुरोहित सीता के कंकण शोभित हाथ श्रीराम के हाथ के ऊपर स्थापित करते हैं जिससे श्रीराम आनन्द का अनुभव करते हैं।

उसके बाद क्रमश: भरत पत्नी माण्डवी, शत्रुघ्न पत्नी श्रुतकीर्ति और लक्ष्मण पत्नी उर्मिला को देखते है। तदनंतर एक चित्र में वे परशुराम को देखते हैं। जब तक लक्ष्मण श्रीराम ने महावीर परशुराम को पराजित किया यह वर्णन करना प्रारम्भ करते हैं। तब तक श्रीराम उसे रोककर प्रसंग को ही परिवर्तन करते हैं। राम के इस प्रकार के विनय को देखकर सीता मुग्ध हो जाती है। अगले चित्र में वे देखते है कि वे सभी भाई विवाहानन्तर सपत्नीक अयोध्या आते है। श्रीराम माता और पिताओं के साथ उनके सुखदविषयों में चिन्तन करती हुई कैसे सुख से उनके दिन व्यतीत हो गये, कैसे सीता के अपरिसीम सौन्दर्य को देखकर उनकी माताएँ और स्वयं कौतुक को प्राप्त होते थे। इत्यादि सर्व मनोरम रीति से वर्णन करते हैं।

उसके बाद राम मन्थरावृतान्त को त्याग कर चित्रांकित इंगुदीपादप को देखकर कहते हैं कि उसकी छाया में निषादराज गुह के साथ उनका साक्षात्कर सम्पन्न हुआ। इस प्रकार संक्षिप्त पाठ का सार प्रस्तुत है।

आपने क्या सीखा

- राम सीता के शारीरिक सौन्दर्य को जाना।
- चित्रदर्शन के माध्यम से सम्पूर्ण रामायण को जाना।
- श्लोक के अन्वय एवं उनके अर्थ को जाना।

पाठान्त प्रश्न

1. दिव्यास्त्रवृतान्तं ब्रह्मादयः - इस श्लोक की व्याख्या कीजिए।
2. सीता कृत रामवर्णन अपने अनुसार लिखिए।
3. **समयः** स वर्तते इस श्लोक की व्याख्या कीजिए।
4. विवाह वृतान्त का वर्णन कीजिए।
5. प्रतनु विरलैः इस श्लोक की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1

1. दिव्यास्त्रों को कृशाश्व से विश्वामित्र ने प्राप्त किये।
2. रामचन्द्र ने ताडकावध के समय विश्वामित्र से दिव्यास्त्र प्राप्त किये।
3. ब्रह्मादि ने वेद के संरक्षण के लिए तप किया।
4. ब्रह्मादि ने हजार वर्षो से अधिक तपस्या की।
5. उन्होंने अपने तेज से ही दिव्यास्त्रों को देखा।
6. उपजाति का लक्षणः-

   अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुयजातयस्ते।
7. अप्रसादानि प्रसादानि कृतानि इति प्रसाद शब्द से च्विप्रत्यय करके क्त प्रत्यय के प्रथमा बहुवचन में प्रसादीकृतानि रूप बना।

14.2

8. विकसित नवीन कमल के समान श्यामल, स्निग्ध व माँसल शरीर वाले श्रीराम है।
9. अनादरेण खण्डितम् अनादरखण्डितम् तृतीयातत्पुरूषसमास,शंकरस्य शरासनम् शंकरदशरासनम् षष्ठीतत्पुरूषसमास अनादरखण्डितम् शंकरशरासनम् येन सः अनादरखण्डितशंकरशरासनः बहुव्रीहिसमास।
10. सीता के पिता, वसिष्ठादि संबंधियों की अर्चना करते हैं।
11. जनक के पुरोहित गौतम शतानन्द हैं।

टिप्पणी

12. जनक के साथ शतानन्दादि वसिष्ठ की अर्चना करते हैं।

13. जनक और रघुवंश का संबंध सब को प्रिय है।

14. संबंध में दाता और गृहीता कुशिक नन्दन विश्वामित्र थे।

14.3

15. रामादि के भाई चित्र में विवाह काल कृत गोदन संस्कार के बाद विवाह दीक्षित दिखाई देते है।

16. विवाह काल।

17. सीता का हाथ शतानन्द ने राम के हाथ में अर्पित किया।

18. सुन्दर कंकण मूर्तिमान महोत्सव के समान सीता का हाथ है।

19. सीता के हाथ ने राम को आनन्दित किया।

20. मंजुभाषिणी छन्द का लक्षण- ''सहसा जगौ भवति मंजुभाषिणी''।

21. राम विनय के माहात्म्य से सुशोभित हैं।

14.4

22. उनके पिता दशरथ चिन्तन करते थे।

23. दशरथ के जीवित रहते नव विवाह के बाद माताओं द्वारा परिपालन से रामादि के दिन सानन्द व्यतीत हुए।

24. सीता के केश प्रतनुविरलाः कपालप्रान्त पर विकसित व मनोहर थे।

25. सीता के दन्त कुसुम सदृश हैं।

26. सीता का मुख मुग्ध है।

27. सीता के ललितालालित चन्द्रिका के समान स्वाभाविक विलास से मधुर अवयव थे।

28. शृंगवेरपुर में इंगुदीपादप के समीप निषादराज गुह का राम के साथ साक्षात्कार सम्पन्न हुआ।